शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

समाज में परिवर्तन इमानदारी से जीवन मूल्यों को अपनाकर ही लाजा जा सकता है।

– डॉ० छाया बाजपेई

गोपालदास 'नीरज' के काव्य में जीवन-मूल्य
लेखक : डॉ० मन्जू चौहान
प्रकाशक : विश्व पुस्तक प्रकाशन
३०४-ए, बी०/जी०-6,
पश्चिम विहार
नई दिल्ली-63, भारत
पृष्ठ : 211
मूल्य : 300/-
ISBN: 978-81-89092-25-2

गोपालदास 'नीरज' के काव्य में जीवन-मूल्य' 'मन्जू चौहान' के शोध प्रबन्ध का प्रकाशन है। यह विषय बहुत ही उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण है। आज हमारे समाज में जीवन-मूल्यों का अवमूल्यन चिन्ता का विषय है। मूल्य, मानव समाज में मानव द्वारा बनाए गए वे नियम हैं जिनके माध्यम से हम अच्छे और बुरे में अन्तर कर सकते, इन्सान को इन्सानियत से जोड़ सकतें, मानवता की स्थापना कर सकते, भाई-चारा कायम हो सके और दूसरों के दुख को समझ सकते। क्योंकि मनुष्य परिवार, समाज, नगर, प्रदेश व देश की एक इकाई होता है, अतः उसके लिए यह आवश्यक है कि वह समाज में व्याप्त सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक, पारम्परिक, वैयक्तिक आदि मूल्यों को जाने और समझे। सभी मूल्यों का एक मूल्य हैं, 'मानवीय-मूल्य' जिसमें सभी का सार तत्व विद्यमान है। क्षरित होते हुए मानवीय-मूल्यों के कारण हमारा युवा समाज दिग्भ्रमित हो रहा है अतः साहित्यकार का प्रथम कर्तव्य है कि वह समाज को मानवीय-मूल्यों से परिचित कराए और 'नीरज जी' ने बखूबी इस कर्तव्य का निर्वाह अपने काव्य में किया है।

पाठक को 'नीरज जी' द्वारा अपने काव्य में वर्णित जीवन मूल्यों को समझने में सहायता कर रहीं है डॉ० मन्जू चौहान। उन्होंने प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को सात अध्यायों में पूर्ण किया है। प्रथम अध्याय में उन्होंने 'नीरज जी' के जीवन संघर्ष और उनके परिवेश का विवेचन किया है। 'नीरज जी' जमीन से जुड़े साहित्यकार हैं, किसी भी कार्य को वें छोटा या बड़ा नहीं मानते, जीविका के लिए उन्होंने छोटे से छोटा कार्य किया। 'नीरज जी' संवेदनशील व्यक्ति हैं और वे मनुष्य के जीवन में प्रेम को अति आवश्यक मानते हैं इसीलिए उन्होंने अपनी माँ, भाई और परिवार की अवहेलना कभी नहीं की चाहें जितने कष्ट के दिन रहे हों। संघर्ष के समय भी अपने आत्म सम्मान को जीवित रखा। उनकी संघर्षपूर्ण जीवन कथा से पाठक, विशेषकर युवा पाठक जीवन में कठिन परिश्रम के लिए प्रेरित होता है।

'नीरज जी' ने अपने जीवन में चारो तरफ जीवन-मूल्यों का अवमूल्यन होते देखा है, जिसे उन्होंने साहित्य के माध्यम से समाज को दिखाया है। 'मन्जू जी' ने अन्य छः अध्यायों में उन्हीं जीवन-मूल्यों की चर्चा की है। उन्होंने गीत, गीतिकाएँ, सिने गीत, मुक्तक, अन्य विविध काव्य और उनके व्यक्तित्व में क्रम से एक-एक अध्याय में आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, वैयक्तिक-मूल्यों की

समाज में परिवर्तन इमानदारी से जीवन मूल्यों को अपनाकर ही लाजा जा सकता है।

डॉ० छाया बाजपेइ

प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, डी०ए-वी०, कॉलेज, कानपुर

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

समाज में परिवर्तन इमानदारी से जीवन मूल्यों को अपनाकर ही लाजा जा सकता है।

डॉ० छाया बाजपेइ

प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, डी०ए-वी०, कॉलेज, कानपुर

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

विवेचना विस्तृत रूप से की है। नीरज के काव्य में अरविन्द, गाँधी, रजनीश, टैगोर, मार्क्स आदि विचारकों की गहरी छाप दिखाई पड़ती है। 'नीरज जी' समाज को सुधारना नहीं बल्कि समाज में परिवर्तन लाना चाहते है और समाज में परिवर्तन ईमानदारी से जीवन-मूल्यों को अपनाकर ही लाया जा सकता है।

प्रारम्भ में शोध प्रबन्ध को पढ़ते हुए ऐसा लगा कि 'मन्जू जी' एक ही बात को बार-बार कह रहीं हैं, किन्तु ऐसाा नहीं है। 'मन्जू जी' ने 'नीरज जी' के सम्पूर्ण साहित्य में जीवन-मूल्यों की खोज की है। अत: उन मूल्यों की बात बार-बार आना स्वाभाविक है। 'मन्जू जी' ने 'नीरज' के काव्य में जीवन मूल्यों' की खोज एवं उनके अर्थ को स्पष्ट करके शोधार्थियों की सहायता की है और मैं निश्चित रूप से यह कह सकती हूँ कि 'मन्जू जी' का यह शोध प्रबन्ध पाठक को 'नीरज' की कविता को समझने एवम् उसका आनन्द लेने में सहायक होगा।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN